अप्राकृत वार्त्ता

17.10.2024 APRĀKṚTA VĀRTTĀ THURSDAY

The Vaiṣṇava is the only true guru of the world. So-called impersonal Brahman-Jñānīs cannot be gurus. Only the worshipers of the Personality of Godhead can be gurus. Even those who have ego in calling themselves servants of the Supreme Personality of Godhead cannot be gurus if they do not consider themselves disciples. One cannot become a guru simply by considering himself as a Vaiṣṇava. That is why our revered spiritual master never refers to himself as a Vaiṣṇava. Whoever claims to be a Vaiṣṇava is a "BRANDED" non-Vaiṣṇava.

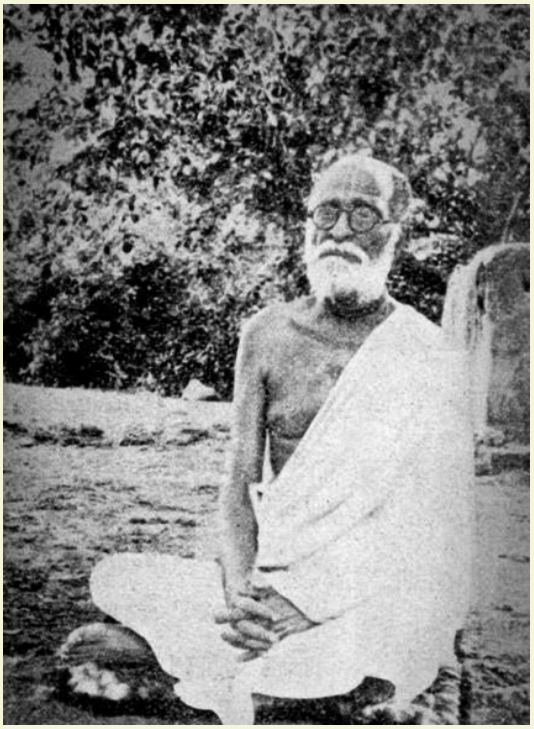

वैष्णव ही जगत् के एकमात्र गुरु हैं। तथाकथित निर्गुण ब्रह्मज्ञानी गुरु नही हो सकते हैं। PERSONALITY OF GODHEAD के उपासक ही गुरु हो सकते हैं। पुरुषोत्तम के सेवकाभिमानी भी फिर गुरु नही हो सकते—यदि वह शिष्य का शिष्याभिमान नही करते। वैष्णवाभिमान के द्वारा गुरु नही हुआ जा सकता है। इसलिए हमारे श्रीगुरुपादपद्म कभी स्वयं को वैष्णव नहीं बोलते हैं। जो स्वयं को वैष्णव बोलता है, वह BRANDED अवैष्णव है।

—Translated from Speech given by Śrīla Prabhupāda in Gauḍīya ,Volume-Eleven,Issue-43

If I think "I am a Vaiṣṇava," then I will never become humble. My heart will become contaminated with the hope of receiving honor from others, and I will surely go to hell.

यदि मैं सोचता हूँ कि “मैं वैष्णव हूँ,” तो मैं कभी विनम्र नहीं हो पाऊँगा। मेरा हृदय दूसरों से सम्मान प्राप्त करने की आशा से दूषित हो जाएगा, और मैं निश्चित रूप से नरक में जाऊँगा।

—Translated and Adopted from "KalyĀṇa Kalpatru"of Śrīla BhaktiVinoda Ṭhākura

To think "No other Vaiṣṇava possesses the quality of renunciation; only I am renounced," is called pride, or pratiṣṭhā (pretentiousness). Such pride and pretentiousness counteracts one's service to Hari and causes degradation.

कोई अन्य वैष्णव वैराग्य के गुण का धारण नहीं करता; केवल मैं ही वैरागी हूं" ऐसा सोचना गर्व या प्रतिष्ठा (दिखावा) कहलाता है। ऐसा गर्व और दिखावा हरि की सेवा का विरोध करता है और पतन का कारण बनता है।

—Letter Forty-three, Yukta-vairāgya – holistic renunciation, Śrīla Bhakti Prajñāna Keśava Gosvāmī Mahārāja

---

एक सच्चा गुरु कभी भी अहंकारपूर्वक स्वयं को गुरु या यहां तक कि उन्नत भक्त भी नहीं मानता है। वह कभी आशा नहीं करता कि "मेरे शिष्य मेरे चरणों में फूल चढ़ाएं, उन पर जल अर्पित करें और वही जल दूसरों पर छिड़कें, और वह उस चरणामृत को ग्रहण करें।" एक शुद्ध गुरु या वैष्णव हमेशा ऐसे अहंकार से दूर रहते हैं। वह स्वाभाविक रूप से स्वयं को अत्यंत नीच और पतित समझते हैं, और वह निरंतर भगवन् के चरणों में प्रार्थना ज्ञापन करते रहते हैं।

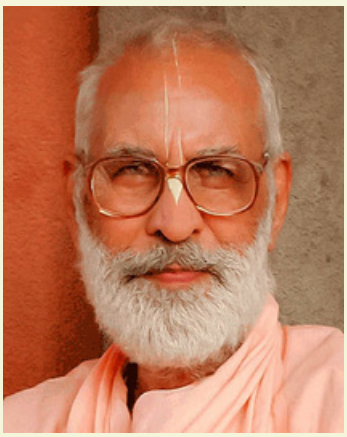

A bona fide guru never egotistically considers himself to be a guru or even an advanced devotee. He never hopes, "May my disciple offer flowers at my feet, may he pour water on them and throw that very water on others, and may he take that caraṇāmṛta." A pure guru, or Vaiṣṇava, always remains far from such egoism. He naturally thinks himself to be extremely low and fallen, and he continuously offers prayers to Bhagavān's feet.

—From the book "Śrī Jagannātha Ratha Yātrā", Śrila B.V. Nārāyaṇa Gosvāmī Mahārāja

---

मैंने वास्तव में घर और परिवार को त्याग दिया है, लेकिन सच्चे गृहत्यागी की तरह सब कुछ श्रीगुरु के चरणकमलों में अर्पण कर के कृष्ण-भजन में लीन नहीं हो सका। पहले ऐसा लगता था कि मेरे हृदय में साधुओं की संगति की इच्छा, महाप्रसाद में पूज्य बुद्धि और भगवान में थोड़ी श्रद्धा थी, लेकिन सच कहने पर अब वह भी जैसे नहीं रही। गुरु और वैष्णवों की सेवा का अवसर मिलने पर भी, संबंध जानने के बाद भी, मैं उन्हें निष्कपट भाव से सेवा नहीं कर पा रहा हूँ। इसका कारण यह है कि मैं स्वयं को वैष्णव समझने लगा हूँ। इसलिए अब मेरे ऊँचे मस्तक को वैष्णवों के चरणों में झुकने का मन नहीं होता।

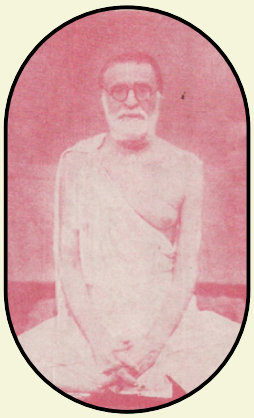

I have indeed renounced my home and family, but I have not been able to surrender everything to the lotus feet of my spiritual master like a true renunciant and devote myself to kṛṣṇa's worship. Earlier, it seems I had a desire for the association of saints, reverence for the holy food (Mahāprasāda), and some faith in God, but to speak the truth, now it seems I don't even have that. Even though I have had the opportunity to serve the Guru and the Vaiṣṇavas, knowing the relationship, I am unable to serve them sincerely. The reason is that I have myself started considering myself a Vaiṣṇava. Thus, my high head does not want to bow down at the feet of the Vaiṣṇavas.

—Translated from Śrī BhaktiSiddhānta RatnaMālā

LICENSED UNDER CREATIVE COMMONS BY APRĀKṚTA VĀRTTĀ

WRITE US AT: mailto:aprakrtavartta108@gmail.com

FOLLOW US AT: @SPD_108